

## हिंदी-ओड़िआ लोकोक्तियों में रामकथा का सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

मौसम तिवारी

शोध छात्रा, हिंदी विभाग, रमादेवी महिला विश्वविद्यालय, विद्या विहार, भुवनेश्वर, ओड़िशा, भारत

DOI: <https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.1.12160>

### सारांश

प्रस्तुत शोध-आलेख हिंदी और ओड़िआ भाषाओं की उन लोकोक्तियों का तुलनात्मक सांस्कृतिक अध्ययन है, जिनमें रामकथा के विविध पात्र राम, सीता, लक्ष्मण, रावण, विभीषण आदि प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उपस्थित हैं तथा रामकथा विविध सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्यों के साथ अभिव्यक्त हुई है। रामकथा भारतीय लोकसंस्कृति में केवल एक महाकाव्यात्मक आख्यान नहीं, बल्कि नैतिक मूल्यों, सामाजिक व्यवहार और सांस्कृतिक चेतना की आधारशिला के रूप में प्रतिष्ठित है। लोकोक्तियों के माध्यम से रामकथा का लोकांतरण यह दर्शाता है कि भारतीय समाज ने इस कथा को शास्त्रीय स्तर से उठाकर जनजीवन के व्यावहारिक स्तर पर आत्मसात कर लिया है।

इस अध्ययन में हिंदी और ओड़िआ लोकोक्तियों का वर्णनात्मक एवं विवेचनात्मक विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि दोनों भाषाएँ एक ही सांस्कृतिक स्रोत से पोषित होने के बावजूद अपने-अपने सामाजिक अनुभवों के अनुसार भिन्न अभिव्यक्तियों विकसित करती हैं। हिंदी लोकोक्तियाँ अपेक्षाकृत सूत्रात्मक, नैतिक और दार्शनिक स्वरूप की हैं, जबकि ओड़िआ लोकोक्तियाँ अधिक कथात्मक, प्रसंगप्रधान और सामाजिक यथार्थ से जुड़ी हुई हैं। रावण और लंका से संबंधित लोकोक्तियाँ अहंकार और पतन की चेतावनी देती हैं, वहीं सीता से जुड़ी लोकोक्तियाँ त्याग, पीड़ा और सामाजिक अन्याय को उजागर करती हैं।

भारतीय सांस्कृतिक दृष्टिकोण से यह शोध सिद्ध करता है कि रामकथा आधारित लोकोक्तियाँ धर्म, कर्म, मर्यादा और लोकन्याय की अवधारणाओं को जनभाषा में प्रभावी रूप से संप्रेषित करती हैं। साथ ही, आधुनिक सामाजिक संदर्भों—सत्ता, संगठनात्मक राजनीति और स्त्री-विमर्श में भी इन लोकोक्तियों की प्रासंगिकता स्पष्ट होती है। इस प्रकार, यह अध्ययन हिंदी-ओड़िआ तुलनात्मक लोकसंस्कृति के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन वर्णनात्मक, तुलनात्मक तथा सांस्कृतिक विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है।

**मूल शब्द:** रामकथा, लोकोक्ति, लोकसंस्कृति, भारतीय सांस्कृतिक दृष्टिकोण, लोकबुद्धि, लोकमानस, सांस्कृतिक प्रतीक

भारतीय लोकसंस्कृति में रामकथा केवल एक धार्मिक आख्यान या साहित्यिक ग्रंथ नहीं है; बल्कि वह भारतीय समाज की सामूहिक चेतना, नैतिक दृष्टि और सांस्कृतिक स्मृति की आधारशिला है। रामकथा ने सहस्राब्दियों से भारतीय जनमानस का संस्कार किया है और जीवन के प्रत्येक पक्ष—धर्म, नीति, परिवार, समाज और सत्ता को प्रभावित किया है। राम, सीता, लक्ष्मण, रावण, हनुमान और विभीषण जैसे पात्र लोकमानस में केवल पौराणिक चरित्र नहीं रह गए; बल्कि वे मानवीय गुण—दोष, आदर्श और यथार्थ के जीवंत प्रतीक बन गए हैं। रामकथा भारतीय भाषाओं में विविध रूपों में अभिव्यक्त हुई है। विभिन्न भाषाओं में चित्रित रामकथा के पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन भारतीय संस्कृति के बहुआयामी स्वरूप को उद्घाटित करता है। तुलनात्मक अध्ययन की यह दृष्टि आज साहित्य-अध्ययन की एक महत्वपूर्ण पद्धति के रूप में स्वीकृत है। हिंदी और ओड़िआ लोकोक्तियों में निहित रामकथात्मक सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन इसी परिप्रेक्ष्य में विशेष महत्त्व रखता है।

'तुलनात्मक साहित्य तथा हिंदी ओड़िआ साहित्य का तुलनात्मक परिदृश्य' में रामकथा की व्यापकता और भारतीय सांस्कृतिक जीवन में उसकी केंद्रीय भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा गया है "तुलसीदास ने ठीक लिखा है— 'नाना भाँति राम अवतारा। रामायण सतकोटि अपारा।' ...रामकथा नानपुराण निगमागम में मिलती हैं। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और प्रत्येक आधुनिक भाषाओं में अनेक रामायण लिखे गए हैं। ...क्योंकि राम, कृष्ण, गंगा और हिमालय भारतीय अस्मिता की पहचान है।" यह कथन रामकथा की अखिल भारतीय व्यापकता तथा उसकी सांस्कृतिक प्रतिष्ठा को रेखांकित करता है। हिंदी और ओड़िआ दोनों भाषाएँ भारतीय आर्य भाषिक परंपरा की सशक्त प्रतिनिधि हैं। इन भाषाओं की लोकोक्तियों में रामकथा की उपस्थिति यह प्रमाणित करती है कि

रामायण केवल ग्रंथों में सीमित न रहकर लोकजीवन का नैतिक—सांस्कृतिक संदर्भग्रंथ बन चुकी है। लोकोक्तियाँ लोकबुद्धि का संक्षिप्त और प्रभावी रूप होती हैं, जिनमें समाज का दीर्घकालीन अनुभव, व्यावहारिक ज्ञान और नैतिक दृष्टि निहित होती है। हिंदी तथा ओड़िआ लोकसाहित्य पर अनेक अध्ययन उपलब्ध हैं और दोनों भाषाओं की लोकोक्तियों पर भी पृथक-पृथक शोधकार्य हुए हैं, किंतु रामकथा—आधारित लोकोक्तियों के तुलनात्मक सांस्कृतिक विश्लेषण की दिशा में अपेक्षाकृत कम कार्य दृष्टिगोचर होता है। विशेषतः हिंदी और ओड़िआ लोकोक्तियों में निहित रामकथात्मक सांस्कृतिक चेतना के तुलनात्मक अध्ययन का अभाव दिखाई देता है। प्रस्तुत शोध इसी रिक्ति की पूर्ति का एक विनम्र प्रयास है। प्रस्तुत शोध-आलेख का उद्देश्य हिंदी और ओड़िआ लोकोक्तियों में निहित रामकथा के सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण करना है। इसके माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि रामकथा किस प्रकार लोकजीवन, लोकमूल्यों और सांस्कृतिक चेतना में रूपांतरित होकर अभिव्यक्त होती है। यह अध्ययन वर्णनात्मक, तुलनात्मक तथा सांस्कृतिक विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है तथा भारतीय सांस्कृतिक दृष्टिकोण को केंद्र में रखता है।

### लोकोक्ति की अवधारणा और रामकथा का लोकांतरण

लोकसाहित्य के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए डॉ. त्रिलोकीनारायण दीक्षित लिखते हैं, "लोक साहित्य जनता की भावनाओं, मनोवृत्तियों, चिन्तन पद्धति और संस्कृति का यथार्थ प्रतिबिंब है। इस साहित्य में जन-संस्कृति का सच्चा सजीव चित्रण उपलब्ध होता है। इसीलिए उसमें सरसता, सहजता और सरलता सर्वत्र उपलब्ध होती है। ...इसके प्रकीर्ण साहित्य लोकोक्तियों, मुहावरों, पहेलियों, बच्चों के लिए लोरियों आदि से मानव-समाज की

जीवन शैली, चिन्तन और बोली का परिज्ञान होता है।<sup>2</sup> लोकोक्ति किसी समाज के सामूहिक अनुभव की संक्षिप्त, प्रतीकात्मक और प्रभावशाली अभिव्यक्ति होती है। यह लोकभाषा में विकसित होती है और पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक परंपरा के माध्यम से संचारित होती रहती है। जब कोई महाकाव्यात्मक आख्यान लोकोक्तियों का आधार बनता है तो इसका अर्थ यह होता है कि वह आख्यान समाज के नैतिक और व्यवहारिक जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। रामकथा के संदर्भ में यह तथ्य विशेष रूप से महत्वपूर्ण है; क्योंकि रामायण का लोकजीवन में रूपांतरण अत्यंत व्यापक और गहन रहा है। लोकोक्तियों के संबंध में यह भी कहा गया है कि "अतीत के सामाजिक-सांस्कृतिक सरोकारों को ढोते रहने की अद्भुत क्षमता रहती है। ये लोक से निकलकर मानव-मात्र के बातचीत का सम्बल बनते हैं।"<sup>3</sup> (भोजपुरी) इस दृष्टि से रामकथा-आधारित लोकोक्तियाँ केवल भाषिक अभिव्यक्तियाँ नहीं, बल्कि लोकानुभव और सांस्कृतिक चेतना की वाहक हैं।

'भोजपुरी-उड़िया लोकोक्तियाँ' में प्रो. हरिश्चंद्र मिश्र लोकोक्ति की प्राचीनता के संबंध में गहन विवेचन करते हुए लिखते हैं कि "वाल्मीकि रामायण में कहावत के अर्थ में 'प्रवाद', 'लोकप्रवाद' तथा 'लौकिकी गाथा' जैसे शब्दों का प्रयोग हुआ है।"<sup>4</sup> जिससे यह स्पष्ट होता है कि लोक में प्रचलित उक्तियाँ और कहावतें प्राचीन भारतीय समाज में भी सामाजिक अनुभव तथा लोकबुद्धि की अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण माध्यम थीं। ध्यातव्य है कि आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने 'लोक और शास्त्र' में लोक को भारतीय जीवन की व्यापक सांस्कृतिक परंपरा का वाहक माना है। उनके अनुसार लोक और शास्त्र परस्पर विरोधी न होकर एक-दूसरे के पूरक हैं। लोक और शास्त्र के इसी अंतर्संबंध के कारण रामकथा शास्त्रीय आख्यान से आगे बढ़कर लोकोक्तियों और लोकपरंपराओं में रूपांतरित हुई है।

हिंदी और ओड़िया लोकोक्तियों में रामकथा का प्रयोग केवल धार्मिक श्रद्धा तक सीमित नहीं है। यहाँ रामकथा सामाजिक व्यवहार, नैतिक चेतावनी, व्यंग्य, आलोचना और जीवन-दर्शन के रूप में सामने आती है। रामकथा का यह लोकांतरण भारतीय समाज की उस प्रवृत्ति को दर्शाता है, जिसमें शास्त्रीय ज्ञान को लोकबुद्धि के स्तर पर आत्मसात कर लिया जाता है।

### ओड़िया लोकोक्तियों में रामकथा के पात्र: विस्तृत वर्णनात्मक विवेचन

ओड़िया लोकोक्तियों में रामकथा का स्वरूप अपेक्षाकृत अधिक कथात्मक, प्रसंगप्रधान और सामाजिक यथार्थ से जुड़ा हुआ दिखाई देता है। रामायण की घटनाएँ यहाँ लोकस्मृति में सुरक्षित रहकर दैनिक जीवन की परिस्थितियों से जुड़ जाती हैं।

रावण और लंका से संबंधित लोकोक्तियाँ ओड़िया लोकसंस्कृति में विशेष महत्व रखती हैं। 'अति दर्प हत लंका' (ଅତି ଦର୍ପ ହତ ଲଙ୍କା) रावण के अहंकार को लंका के विनाश का मूल कारण ठहराती है। यह कथन केवल पौराणिक स्मरण नहीं है; बल्कि यह समाज को यह चेतावनी देता है कि अत्यधिक घमंड किसी भी व्यक्ति, परिवार या सत्ता के पतन का कारण बन सकता है। इसी प्रकार 'लंकारे जेतक जनम, समस्ते बाउन हात' (ଲଙ୍କାରେଜେତକ ଜନମ, ସମସ୍ତେ ବାଉନ ହାତ), अर्थात् लंका में सब बावन हाथ के। यह लोकोक्ति लंका को कुख्यात स्थान के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करती है और यह संकेत देती है कि किसी स्थान की पहचान वहाँ के लोगों के आचरण से बनती है।

कुंभकर्ण और कालनेमि से जुड़ी लोकोक्तियाँ ओड़िया लोकमानस की व्यावहारिक बुद्धि को उजागर करती हैं। 'कुंभकर्ण निद्रा' (କୁମ୍ଭକର୍ଣ୍ଣ ନିଦ୍ରା) अत्यधिक आलस्य, निष्क्रियता और चेतनाहीन जीवन पर तीखा व्यंग्य है। रामायण का एक पौराणिक प्रसंग है, जिसमें लंकापति रावण ने हनुमान जी को मार्ग में रोकने के लिए मायावी राक्षस कालनेमि को लंका का आधा राज्य देने का वचन दिया था। इसी को आधार बना कर बनी लोकोक्ति, 'कालनेमि

लंका भाग' (କାଳନେମିର ଲଙ୍କା ଭାଗ), जो बिना परिश्रम के लाभ पाने की मानसिकता की आलोचना करती है।

विभीषण से संबंधित लोकोक्तियाँ सामाजिक और पारिवारिक विघटन की ओर संकेत करती हैं। 'घरभेदे राबण मला' (ଘରଭେଦେ ରାବଣ ମଲା), अर्थात् घर के भेदी के कारण ही रावण की मृत्यु हुई। यह स्पष्ट करती है कि बाहरी शत्रु से अधिक घातक आंतरिक फूट होती है। यह लोकोक्ति पारिवारिक, सामाजिक और राजनीतिक संदर्भों में समान रूप से प्रासंगिक है। सीता-त्याग से जुड़ी लोकोक्ति 'धोबणिटा कथारे रामचंद्र सीतांकु तेज्य करिथिले' (ଧୋବଣିଟା କଥାରେ ରାମଚନ୍ଦ୍ର ସୀତାଙ୍କୁ ଟେଜ୍ୟ କରିଥିଲେ) जिसका अर्थ है की धोबिन की बातों में आकर रामचंद्र ने सीता का त्याग किया था। लोकमत, अफवाह और सत्ता के नैतिक द्वंद्व को उजागर करती है। यह लोकोक्ति दर्शाती है कि लोकमत के दबाव में लिया गया निर्णय किस प्रकार अन्यायपूर्ण हो सकता है।

'गुंडुचिमूषा सेतुबंध बांधिबा न्याय' (ଗୁଣ୍ଡୁଚିମୁଷା ସେତୁବନ୍ଧ ବାନ୍ଧିବା ନ୍ୟାୟ)— यहाँ गिलहरी के द्वारा रामसेतु बाँधने के न्याय के संबंध में कहा गया है। यह ओड़िया लोकदृष्टि का सकारात्मक पक्ष प्रस्तुत करती है, जहाँ छोटे से छोटे प्रयास को भी सामाजिक और नैतिक रूप से महत्वपूर्ण माना गया है। हिंदी में इस संबंध में पंक्ति प्रचलित है, "तन-मन राम के कारजे, लगी गिलहरी जोय। कण-कण जोड़े पुल बंधे, प्रभु की महिमा होय।।"

ओड़िया लोकजीवन में रामकथा के प्रसंग केवल नैतिक शिक्षा तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे व्यंग्य और व्यवहारिक बुद्धि के माध्यम भी बन जाते हैं। 'अइला रावण हरिला सीता, एथिपाइँ किआँ पोथि सातुटा' (ଅଇଲା ରାବଣ ହାରିଲା ସୀତା। ଏଥିପାଇଁ କିଆଁ ପୋଥି ସାତୁଟା), यह लोकोक्ति सामान्य घटना को अनावश्यक रूप से बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करने वालों के लिए प्रयुक्त होती है। इस लोकोक्ति में सीता-हरण जैसे प्रसिद्ध रामकथात्मक प्रसंग का उपयोग अतिरंजना और अनावश्यक विस्तार पर व्यंग्य करने के लिए किया गया है।

### हिंदी लोकोक्तियों में रामकथा : विस्तृत सांस्कृतिक विश्लेषण

हिंदी लोकोक्तियों में रामकथा अपेक्षाकृत अधिक सूत्रात्मक, नैतिक और दार्शनिक रूप में व्यक्त होती है। यहाँ राम लोकजीवन के परम सहायक, न्यायकारी और भाग्य-नियंता के रूप में प्रतिष्ठित हैं। 'जा विध राखे राम, ताही विध रहिए', 'निर्बल के बल राम, निर्धन के धन गिरधारी', 'राम भए जिहि दाहिने, सबै दाहिने ताहि' जैसी लोकोक्तियाँ धैर्य, विश्वास और आश्रय की भावना को पुष्ट करती हैं।

हिंदी लोकपरंपरा में रामनाम के साथ पाखंड और ढोंग की तीखी आलोचना भी जुड़ी है। 'मुंह में राम, बगल में छुरी', 'राम नाम जपना, पराया माल अपना' जैसी लोकोक्तियाँ सामाजिक दुराचार और दोहरे आचरण को उजागर करती हैं। यह तथ्य दर्शाता है कि लोकसंस्कृति केवल आदर्श प्रस्तुत नहीं करती, बल्कि सामाजिक विकृतियों की आलोचना भी करती है।

रावण और लंका से जुड़ी लोकोक्तियाँ - 'रावण का अहंकार', 'रावण की लंका', वैभव, शक्ति और अंततः विनाश के प्रतीक हैं। वहीं 'लक्ष्मण रेखा', 'सीता सी सती', 'सीता जैसी परीक्षा' जैसी लोकोक्तियाँ मर्यादा, नारी-चरित्र और सामाजिक अपेक्षाओं को सांस्कृतिक संदर्भ प्रदान करती हैं।

### हिंदी-ओड़िया लोकोक्तियों का तुलनात्मक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

हिंदी और ओड़िया लोकोक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि दोनों भाषाएँ एक ही सांस्कृतिक स्रोत रामकथा से पोषित हैं, किंतु उनकी अभिव्यक्ति सामाजिक अनुभवों के अनुसार भिन्न है। हिंदी लोकोक्तियाँ अधिक संक्षिप्त, सूत्रात्मक और नैतिक निष्कर्ष प्रधान हैं, जबकि ओड़िया लोकोक्तियाँ कथात्मक विस्तार और सामाजिक संदर्भों पर अधिक बल देती हैं।

राम दोनों परंपराओं में धर्म, मर्यादा और न्याय के प्रतीक हैं। किंतु जहाँ हिंदी में राम ईश्वरीय आश्रय और भाग्य के नियंत्रक के रूप में अधिक दिखाई देते हैं, वहीं ओड़िआ परंपरा में राम अपेक्षाकृत कम और रावण—केंद्रित सामाजिक चेतावनियाँ अधिक दिखाई देती हैं। रावण दोनों भाषाओं में अहंकार और पतन का प्रतीक है, किंतु ओड़िआ लोकोक्तियों में उसका पतन सामाजिक और पारिवारिक विघटन से अधिक गहराई से जुड़ा हुआ है।

सीता दोनों परंपराओं में त्याग, सहनशीलता और पीड़ा की प्रतीक हैं। हिंदी में उनका स्वरूप अधिक आदर्शवादी है, जबकि ओड़िआ में वे सामाजिक अन्याय और लोकमत की शिकार नारी के रूप में अधिक स्पष्ट दिखाई देती हैं। इस अंतर से दोनों समाजों की लोकदृष्टि का सूक्ष्म अंतर उजागर होता है।

### भारतीय सांस्कृतिक दृष्टिकोण से विवेचन

रामकथा आधारित लोकोक्तियाँ भारतीय संस्कृति की मूल अवधारणाओं— धर्म, कर्म, मर्यादा और लोकन्याय को लोकभाषा में रूपांतरित करती हैं। हजारीप्रसाद द्विवेदी ने संस्कृति को परिभाषित करते हुए कहा है कि "प्रत्येक मनुष्य की श्रेष्ठ साधनाएँ ही संस्कृति हैं।"<sup>5</sup> इस दृष्टि से रामकथा—आधारित लोकोक्तियाँ भारतीय समाज की उन श्रेष्ठ जीवन—मूल्यों और नैतिक आदर्शों की वाहक हैं, जो पीढ़ी—दर—पीढ़ी लोकपरंपरा के माध्यम से संचारित होते रहे हैं। भारतीय परंपरा में धर्म का अर्थ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक आचरण से है। राम मर्यादा के प्रतीक हैं, जबकि रावण मर्यादा—भंग के। राम और रावण भारतीय सांस्कृतिक चेतना में केवल दो पौराणिक पात्र नहीं हैं, बल्कि क्रमशः सद्गति और असद्गति के प्रतीक भी हैं। इसी संदर्भ में 'रामकथा के पात्र : एक प्रतीकात्मक विश्लेषण' आलेख में कहा गया है, "राम—रावण संघर्ष चाहे ऐतिहासिक सत्य हो, पर अपने प्रतीकात्मक अर्थ में अपने भीतर एक तात्विक अर्थ भी छिपाए हैं। राम—रावण युद्ध एक प्रकार से बहुचचित देवासुर संग्राम की पुनरावृत्ति है। यह वह संग्राम है जो सृष्टि के आदिकाल से चला है और अन्त तक चलता रहेगा, क्योंकि मन की अत्सवृत्तियाँ बार—बार दबकर भी पुनः उभर आती हैं और सद्गतियों को पुनः संघर्षरत होना पड़ता है।... रावण के रूप में राम असद्—वृत्तियों को मारते हैं। इस प्रकार सात्विक गुणों का स्फुरण और उन्नयन ही रामकथा का मूल है।"<sup>6</sup> यही कारण है कि हिंदी और ओड़िआ लोकोक्तियों में रावण अहंकार, अन्याय और पतन का प्रतीक बनकर उपस्थित होता है।

सीता का चरित्र भारतीय संस्कृति में त्याग और सहनशीलता का प्रतीक होने के साथ—साथ उस सामाजिक पीड़ा को भी उजागर करता है, जिसे स्त्री को सहना पड़ता है। लक्ष्मण रेखा मर्यादा की सीमा का प्रतीक बनकर समाज को चेतावनी देती है। इस प्रकार, ये लोकोक्तियाँ भारतीय सांस्कृतिक मूल्यबोध का लोकस्तरीय रूप प्रस्तुत करती हैं। सीता से संबंधित लोकोक्तियाँ केवल आदर्श नारीत्व की प्रतिष्ठा नहीं करती; बल्कि वे भारतीय समाज में स्त्री की सामाजिक स्थिति, उसकी परीक्षा तथा उस पर आरोपित नैतिक अपेक्षाओं को भी अभिव्यक्त करती हैं। इस दृष्टि से ये लोकोक्तियाँ लोकमानस में निहित स्त्री—संबंधी सांस्कृतिक धारणाओं को समझने का महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती हैं। यद्यपि इस प्रसंग की शास्त्रीय व्याख्याओं में भिन्नता मिलती है, परंतु लोकमानस में ऐसी अवधारणाएँ विद्यमान हैं।

### आधुनिक संदर्भों में प्रासंगिकता

आधुनिक समाज में रामकथा आधारित लोकोक्तियाँ नई अर्थवत्ता प्राप्त करती हैं। सत्ता, राजनीति और संस्थागत जीवन में 'रावण का अहंकार' आज भी उतना ही प्रासंगिक है। 'घर का भेदी लंका ढाए' संगठनात्मक राजनीति, पारिवारिक संघर्ष और विश्वासघात को समझने का सशक्त रूपक है।

स्त्री—विमर्श के संदर्भ में सीता की परीक्षा आज भी सामाजिक यथार्थ को प्रतिबिंबित करती है। वहीं 'लक्ष्मण रेखा' आधुनिक

जीवन में नैतिक सीमाओं, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक उत्तरदायित्व के संतुलन को रेखांकित करती है।

सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से देखा जाए तो हिंदी और ओड़िआ दोनों भाषाओं की लोकोक्तियाँ रामकथा को केवल धार्मिक आख्यान के रूप में नहीं, बल्कि लोकमूल्यों, सामाजिक अनुभवों और नैतिक चेतना के वाहक के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

### निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि हिंदी और ओड़िआ की रामकथा—आधारित लोकोक्तियाँ भारतीय लोकसंस्कृति की साझा और जीवंत विरासत हैं। हिंदी—ओड़िआ लोकोक्तियों में रामकथा का सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य यह स्पष्ट करता है कि भाषिक विविधता के बावजूद भारतीय संस्कृति की मूल चेतना एक है। ये लोकोक्तियाँ केवल अतीत की स्मृतियाँ नहीं; बल्कि वर्तमान और भविष्य के सामाजिक विमर्श के लिए भी मार्गदर्शक हैं। रामकथा भारतीय सांस्कृतिक एकात्मता की ऐसी धुरी है, जो विविध भाषाओं और लोकपरंपराओं को एक साझा मूल्यबोध से जोड़ती है। इस प्रकार, रामकथा—आधारित लोकोक्तियाँ भारतीय लोकसंस्कृति में मूल्य—संचार की जीवंत और सतत प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करती हैं।

### भविष्य की शोध—संभावनाएँ

प्रस्तुत शोध—आलेख हिंदी और ओड़िआ की रामकथा—आधारित लोकोक्तियों के तुलनात्मक अध्ययन तक सीमित रहते हुए भी अनेक नई शोध—दिशाओं की संभावना प्रस्तुत करता है। भविष्य में इस अध्ययन को अन्य भारतीय भाषाओं की रामकथा—आधारित लोकोक्तियों के साथ तुलनात्मक रूप से विस्तारित किया जा सकता है। सीता—केंद्रित लोकोक्तियों का नारी—विमर्श के दृष्टिकोण से विश्लेषण भारतीय समाज में स्त्री की सामाजिक स्थिति को समझने में सहायक हो सकता है। इसी प्रकार, राम—रावण प्रतीकों के माध्यम से सत्ता, नैतिकता और लोकनीति के संबंधों का अध्ययन समकालीन सामाजिक और राजनीतिक संदर्भों में महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है। शास्त्रीय रामायण और लोकपरंपरा के अंतर्संबंधों तथा आधुनिक समाज में लोकोक्तियों की बदलती अर्थवत्ता पर केंद्रित अनुसंधान इस क्षेत्र को और समृद्ध कर सकता है।

### संदर्भ सूची

1. प्रो. मिश्र राधाकांत, डॉ. दास स्नेहलता, तुलनात्मक साहित्य तथा हिंदी ओड़िआ साहित्य का तुलनात्मक परिदृश्य, प्रथम संस्करण—2021, प्लानेट 'वी' हिंदी बुक सेंटर, कटक, पृ. सं. 72
2. दीक्षित त्रिलोकीनारायण, आलेख— लोकगीतों में रामचरित, सम्मेलन पत्रिका, संपादक— श्रीवास्तव प्रकाशनारायण, मानस चतुःशती विशेषांक, पौष—भाद्रपद, शक १८६६, हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, पृ. सं. 174
3. प्रो. मिश्र हरिश्चंद्र, भोजपुरी—उड़िया लोकोक्तियाँ, संपादक— तिवारी श्रीराम, आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी, मध्य प्रदेश संस्कृति परिषद्, वर्ष 2012, पृ. सं. 38
4. प्रो. मिश्र हरिश्चंद्र, भोजपुरी—उड़िया लोकोक्तियाँ, संपादक— तिवारी श्रीराम, आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी, मध्य प्रदेश संस्कृति परिषद्, वर्ष 2012, पृ. सं. 38
5. द्विवेदी हजारीप्रसाद, भारतीय संस्कृति की देन, ऑनलाइन स्रोत, उपलब्ध— <https://www.hindwi.org/essay/bharatiy-sanskriti-ki-den-hajari-prasad-dwivedi-essay>, अभिगमन तिथि: 03 जनवरी, 2026
6. डॉ. आर्य देवेन्द्र, आलेख— रामकथा के पात्र : एक प्रतीकात्मक विश्लेषण, सम्मेलन पत्रिका, संपादक— श्रीवास्तव प्रकाशनारायण, मानस चतुःशती विशेषांक, पौष—भाद्रपद, शक १८६६, हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, पृ. सं. 206